1

असाम्प्रदायिक मसीहियतः एक परिचय

व्यावहारिक तौर पर आज संसार में अधिकतर लोगों को असाम्प्रदायिक मसीहियत के बारे में कुछ भी पता नहीं है। बहुत से लोगों को केवल मसीही होने का यह विचार हो सकता है, स्वीकार करना बहुत ही कठिन लगता है। यह बताने के साथ ही कि कोई मसीही है, एक और प्रश्न जुड़ा होता है ''आप किस डिनोमिनेशन के सदस्य हैं ?'' अपने आपको किसी डिनोमिनेशन अर्थात साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य न होने वाले को मसीही होने से इन्कार किया जाता है। कोई लाख मसीही होने और किसी साम्प्रदायिक कलीसिया से न जुड़े होने की बात कहे, परन्तु साम्प्रदायिक कलीसिया का नाम उसके साथ जोड़ ही दिया जाएगा।

मान लीजिए कि दर्जन भर मसीही लोग विश्वासियों की एक ऐसी मण्डली के रूप में काम और आराधना करने लगते हैं कि किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिक कलीसिया से उनकी कोई संगति नहीं है। यदि वे अपने आपको मसीही और केवल मसीही अर्थात केवल मसीह की कलीसिया ही होने का दावा करें, तो बिना किसी जांच – पड़ताल के सब लोग उसे एक साम्प्रदायिक कलीसिया का नाम दे देंगे।[1]

बहुत से लोगों को लगता है कि मसीही होने के लिए केवल मसीही होना और कलीसिया के लिए केवल मसीह की कलीसिया कहलाना सम्भव नहीं है। मैं मान लेता हूं कि यरूशलेम की उस कलीसिया को सम्मान देने से कोई इन्कार नहीं करेगा जिसमें लोग परमेश्वर के आत्मा के द्वारा बोलते थे। प्रेरितों के काम के आरम्भिक सात अध्यायों में इस मण्डली के संगठन व प्रारम्भिक कार्य का इतिहास मिलता है। इसके सदस्यों की संख्या हज़ारों में थी, परन्तु फिर भी इन सभी विश्वासियों को केवल मसीही ही कहा जाता था। उनमें से किसी ने भी हमारे प्रभु के चेले होने से अधिक होने का दावा नहीं किया था। उद्धार पाए हुए प्रत्येक सदस्य को प्रभु द्वारा कलीसिया में मिलाया गया था। प्रभु ने उन्हें किस कलीसिया में मिलाया था ? ये सब मसीही किस साम्प्रदायिक कलीसिया या डिनोमिनेशन से जुड़े थे ? उस समय ऐसी कोई साम्प्रदायिक कलीसिया थी ही नहीं जिसके वे सदस्य बनते।

यदि यरूशलेम के हज़ारों लोग मसीह के चेले बन गए, उन्हें उद्धार मिला और वे कलीसिया में मिलाए गए, उनमें से कोई भी किसी साम्प्रदायिक कलीसिया से नहीं बल्कि केवल ''कलीसिया'' से जुड़ा था, तो आज हज़ारों लोग उनकी तरह क्यों नहीं हो सकते ?

हम ऐसे ही मसीही, चेले और उद्धार पाए हुए लोगों के रूप में अपने विशेषाधिकार का इन्कार ज़्यों करते हैं ? यदि ''कलीसिया'' के सदस्यों के रूप में और केवल चेले बनकर ही उनका उद्धार हो सकता था, वे मसीही जीवन बिता सकते थे, और परमेश्वर के लिए काम करके उसकी आराधना कर सकते थे, तो आज मैं ज़्यों नहीं कर सकता ? मुझे ज़्या मुश्किल है ? यदि ये लोग हमारे प्रभु के प्रेरितों की अगुआई में ''कलीसिया'' में मिलाए गए थे, तो उनकी तरह मिलाए जाने की बात ज़्या हमारे लिए सुरक्षित, बल्कि बहुत ही सुरक्षित नहीं है ? वास्तव में ज़्या परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों में आत्मा के इस पवित्र उदाहरण की उपेक्षा करना खतरनाक नहीं है ? ''इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'' (रोमियों 8:14)।

प्रारज़्भिक चेलों के इस नमूने पर न चल पाने का अर्थ निश्चय ही परमेश्वर के आत्मा की अगुआई में न चलना है और परमेश्वर के आत्मा की अगुआई में न चल पाने का अर्थ परमेश्वर के आज्ञाकारी बालक न बनना है। हमारे लिए परमेश्वर की विश्वासी संतान होने का एकमात्र ढंग पवित्र आत्मा की बात मानना है; और पवित्र आत्मा की बात मानने का अर्थ किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य न होकर केवल चेले अर्थात मसीही बनना है, जिन्हें उद्धार पाए हुए होने के कारण उसकी कलीसिया में मिलाया गया है।

ज़्या संसार को हमारे प्रभु का धर्म उसकी प्रेरणा पाए प्रेरितों तथा नबियों द्वारा दिया होना ही काफ़ी नहीं है ? ज़्या हमें उसके प्रेरितों पर यकीन नहीं है ? ज़्या हममें इसमें सुधार करने के लिए सुझाव देने का साहस है ?

मान लीजिए कि हमारे प्रभु के नए नियम का विश्वास से अध्ययन करके कोई आदमी अपने आपको प्रभु की आज्ञाओं को मन से स्वीकार करते हुए मसीह के आगे समर्पित कर देता है। यदि वह वही करने और बनने का प्रयास करता है जो नये नियम का यह मसीही उसे सिखाता है, और मसीह की अगुआई के बिना कुछ भी करने या बनने से इन्कार करता है, तो वह ज़्या बनेगा अर्थात उसे ज़्या कहा जाएगा ? निश्चय ही वह मसीह का एक चेला कहलाएगा, उद्धार को पा लेगा और निस्संदेह उसे ''कलीसिया'' में मिला लिया जाएगा। वास्तव में वह बहुत कुछ यरूशलेम के चेलों की तरह होगा।

मान लीजिए कि किसी नगर में बहुत से धार्मिक लोग रहते हैं। यदि वे यीशु के अलावा किसी और को प्रभु न मानते हों, और उस कलीसिया को छोड़ जिसमें उन्हें उद्धार पाने के समय प्रभु ने मिलाया था किसी और कलीसिया को न जानते हुए परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठे होते हैं, तो उस नगर के ये सैकड़ों चेले किसकी कलीसिया बनेंगे ? वे कौन सी साज़्प्रदायिक कलीसिया बनेंगे ? निश्चय ही वे कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं बनेंगे; उनका सज़्बन्ध तो केवल उस कलीसिया से होगा, जिसे मसीह ने बनाया था।

पाद टिप्पणी

[1]पृष्ठ 11 में साज़्प्रदायिक पर टिप्पणी देखिए।